ॐ

विश्व हिन्दू परिषद

केन्द्रीय प्रबन्ध समिति बैठक - १४-१५ जुलाई, २०१०

कारसेवकपुरम, जानकीघाट, परिक्रमा मार्ग, अयोध्या (फैजाबाद) उ०प्र०

प्रस्ताव : ५

विषय : देश में बढ़ता हुआ नक्सलवाद

विश्व हिन्दू परिषद-प्रबन्ध समिति, अयोध्या का यह उपवेशन देश में बढ़ रहे नक्सलवाद की स्थिति पर घोर चिन्ता प्रकट करता है।

१९६० से चल रहे एक विकास विरोधी, जन विरोधी, जघन्य हिंसक रूप से उभरते हुए धारा प्रवाह का नाम है 'नक्सलवाद'। सी.पी.आई.एम. के द्वारा फैल रहा यह आतंक न विचार है, न धारा है, अब यह सिर्फ आतंक का सहारा है।

ईसाइयों के द्वारा पोषित और आई.एस.आई. का उपकरण बना हुआ नक्सलवाद सम्पूर्ण देश की चिन्ता का विषय बन गया है। पशुपति से तिरूपति तक का रेड कोरिडॉर की रचना करने वाले और अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के अन्तर्गत काम करने वाले यह आतंकी आज देश के ३० में से १३ प्रान्तों में करीब २०० जिलों में ९२,००० वर्ग किलोमीटर के भू प्रदेश में ३०,००० आर्म कैडर और ७०,००० रैगुलर कैडर के साथ खतरनाक बनते जा रहे हैं। देश की ४० प्रतिशत भूमि और ३५ प्रतिशत जनसंख्या पर शिकंजा कसता हुआ यह नक्सलवाद देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। यह नक्सलवादी तालिबानों की तरह उनका साथ छोड़ने वालों को, उनके वृद्ध माताओं और बहनों को जिन्दा जलाने लगे हैं। उनके हाथों मारे गए अर्द्धसैनिक बलों के शवों की दुर्दशा देखकर ध्यान में आता है कि वे किस निर्ममता से सैनिकों की हत्याएं कर रहे हैं। नक्सलियों का जनविरोधी व मानवता विरोधी आचरण यह दर्शाने के लिए काफी है कि वे किसी क्रान्ति के वाहक नहीं है। ६,००० से ज्यादा पुलिसकर्मी और सामान्य लोगों को मारना, बस, ट्रेनों को बम से उड़ाना, उद्यमियों से अवैध वसूली करना, अब तक ६०० से ज्यादा खूनी वारदातों में लिप्त होना, पंजाब, हरियाणा से लौट रहे वनवासी मजदूरों को लूटना, क्रान्ति के लक्षण नहीं हो सकते। रेलगाड़ियाँ, बसों, सड़क निर्माण करने वाले वाहनों तथा विद्यालयों को भी बम विस्फोट से नष्ट करने से यह स्पष्ट होता है कि वे

विकास व रोजगार की कमी के कारण हथियार नहीं उठा रहे हैं। नेपाल से उत्साहित होकर वे सम्पूर्ण देश को आतंकित करके सत्ता हथियाना चाहते हैं।

प्रशिक्षित सेना का रूप ले चुके नक्सलवादी एक के बाद एक नरसंहार करते जा रहे हैं परन्तु सम्भ्रम में पड़ी भारत सरकार कोई ठोस नक्सल विरोधी रणनीति तैयार नहीं कर पाई है। नक्सलवाद को कानून की समस्या न मानकर उसे आर्थिक विकास के साथ जोड़कर देश के प्रधानमंत्री असमंजसता का ही परिचय दे रहे हैं। नक्सलियों को अपने भाई-बहन कहने वाले राजनैतिक नेता, विकास का झूठा शोर मचाने वाले बुद्धिजीवी और हिंसक माओवादियों के हमदर्द पत्रकार ही वास्तव में नक्सलवाद बढ़ाने के जिम्मेदार हैं।

विश्व हिन्दू परिषद का यह उपवेशन भारत सरकार से अपील करता है कि इस देश की अखण्डता को भंग करने वाले ईसाई और आई.एस.आई. द्वारा समर्थित इस षड्यंत्र को समाप्त करने के लिए दृढ़ रणनीति अपनाए तथा सम्भ्रम छोड़कर सेना को प्रयोग करने की योजना बनाए। माओवाद भारत के विरुद्ध खुला युद्ध है और युद्ध में सेना ही लड़ा करती है।

राज्य सरकार व केन्द्र सरकार एक दूसरे पर आरोप लगाने की जगह इसे एक राष्ट्रीय संकट के रूप में स्वीकार करे तथा इनको समाप्त करने के लिए सम्बंधित योजना बनाए, जिसमें समाज को भी सहयोगी बनाए।

यह उपवेशन समाज से अपील करता है कि नक्सलियों के देश विरोधी और समाज विरोधी षड्यंत्रों को समझते हुए विद्यालयों, महाविद्यालयों आदि में पनप रहे इनके समर्थकों को पहचान कर उन पर रोक लगाए।

प्रस्तावक : प्रशान्त हरतालकर

अनुमोदक : मधुकर राव दीक्षित

दिनांक : १५ जुलाई, २०१०